# 7

# कर्नाटक संगीत की स्वर लिपि पद्धति

स्वर लिपि का अर्थ है संगीत का दृश्य स्वरूप। यह सांगतिक सौच को अक्षरों को अक्षरों और चिन्हों जैसे लिखित संकेतों के माध्यम से समझाने की कला है। संगीत लिपि शास्त्र संगीत लिपि या स्वर लिपि है। पहले संगीत मौखिक पद्धति से सिखाया जाता था क्योंकि स्वर लिपि की आवश्यकता नहीं पड़ती थी और उसका प्रयोग करना भी वर्जित था। स्वर लिपि संगीत का दृश्य रूप में अनुवाद है। कागज पर संगीत का अंकन किये जाने पर संगीत के विद्यार्थी उसकी भली प्रकार व्याख्या कर सकते हैं।

यद्यपि सीखने की सर्वोत्तम विधि किसी प्रख्यात एवं प्रशिक्षित शिक्षक के द्वारा होती है, भारत में कुछ विद्यार्थी संगीत की परीक्षायें निजी प्रत्याशी के रूप में देते हैं। इस प्रकार के छात्रों के लिये संगीत पुस्तकों के माध्यम से सीखना आवश्यक है। यद्यपि कुछ संगीतज्ञ आज भी विद्यार्थियों का स्वर लिपि प्रयोग करना पसंद नहीं करते हैं, फिर भी उनके लिये यह बहुत उपयोग सिद्ध होती है। आज हम कई छपी हुई पुस्तकें उपलब्ध हैं, जिनमें गीत, स्वरजति, वर्ण, कृति इत्यादि स्वर लिपि सहित प्रकाशित हैं।

## उद्देश्य

इस पाठ का अध्ययन करने के पश्चात शिक्षार्थी:

- स्वर लिपि के मूल तत्त्व सीख पायेगा;
- कई वर्ष पूर्व सीखी गई तथा स्वर लिपि में मुद्रित किसी रचना को अपने दिमाग में याद कर पायेगा तथा गा पायेगा;
- कागज पर लिखि गई रचना का अभ्यास कर पायेगा;
- एक सरल करना को लिपिबद्ध कर पायेगा;
- स्वर लिपि पद्धति का संक्षिप्त इतिहास तथा आंकलन कर पायेगा।

टिप्पणी

## ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

प्राचीन और मध्यकालीन संगीत ग्रंथों में स्वर लिपि पर कोई अध्याय नहीं था। संगीत लिपि शास्त्र सार्वभौमिक रुचि का विषय है। रचनायें स्वर लिपि में कागज या कुजुन के पत्तों पर लेखबद्ध नहीं थीं। मध्य कालीन प्रबंधों के लिये केवल सोल्फा स्वर लिपि की रूपरेखा दी गयी थी तथा समय की अवधि बताने के लिये कोई संकेत नहीं दिया गया था। स्थायी लक्षण वहां नहीं थे। कुडुमियामलई संगीत शिलालेख की शताब्दी में हम स्वर लिपि के अपरिष्कृत रूप को पहचान सकते हैं। परंतु एक लंबे समय के बाद हम वहां से स्वरों का पता लगा सकते हैं। 19वीं शताब्दी के अंत में हम स्वर लिपि सहित संगीत को लिख सकते थे। सुब्बराम दीक्षितर के ग्रंथ 'संगीत संप्रदाय प्रदर्शिनी' से हम स्वर लिपि को पहचान सकते हैं। 20वीं शताब्दी में तच्चूर भाइयों ने स्वर लिपि के सही रूप का आविष्कार किया और संगीत त्रिमूर्ति की स्वर लिपि सहित रचनाओं पर कई पुस्तकें लिखीं।

### पाठगत प्रश्न 7.1

1. स्वर लिपि का अर्थ क्या है?
2. स्वर लिपि का लाभ क्या है?
3. स्वर लिपि का अपरिष्कृत रूप हमें कहां प्राप्त होता है?

## 7.2 स्वर लिपि का वगीकरण

स्वर लिपि अथवा संगीत लिपि शास्त्र की दो मुख्य पद्धतियां हैं। एक पाश्चात्य संगीत में प्रयोग की जाने वाली स्टाफ नोटशन और दूसरी भारतीय संगीत में प्रयुक्त सरगम स्वर लिपि।

### 7.2.1 स्टाफ स्वर लिपि

पाश्चात्य संगीत पद्धति में संगीत पांच पंक्तियों में लिखा जाता है। स्वर पंक्ति पर या रिक्त स्थान के बीच में लिखे जाते हैं। उदाहरणतया:-

टिप्पणी

### 7.2.2 सरगम स्वर लिपि

भारतीय शास्त्रीय संगीत पद्धति में स रि ग म प ध नि जैसे संगीत सोल्फा शब्दांश सीधी पंक्ति में लिखे जाते हैं और रचनाओं की कविता या साहित्य सोल्फा संकेत के भीतर लिखे जाते हैं।

उदाहरणतया

सं सं सं नि ध नि सं नि ध प ध प म प

कमलजड़लवीमाला सुनयना

स्वर लिपि लिखते समय हम निम्न संकेतों का प्रयोग करते हैं:-

1. समय का माप या ताल
2. अंतराल
3. स्थायी

## पाठगत प्रश्न 7.2

1. कितने प्रकार की स्वर लिपियां प्रचलन में हैं?
2. स्टाफ स्वर लिपि क्या है?
3. सोल्फा स्वर लिपि क्या है?
4. स्वर लिपि में क्या महत्त्वपूर्ण तत्त्व प्रयुक्त होते हैं?

## 7.3 संगीत स्वरों के प्रकार

रचना के सबसे ऊपर राग का नाम बताते हैं, तत्पश्चात राग का मेल लिखते हैं और संबन्धित स्वर के प्रकार बताते हैं। सुविधा के लिये संख्या 1, 2, 3 शुद्ध और तीव्र स्वरों को बताने के लिये प्रयुक्त होती है। कर्नाटक संगीत में स्वरों के 16 प्रकार हैं। 16 में 4 के दो नाम हैं। वे इस प्रकार हैं:

| क्रम सं | नाम | चिह्न |
|---|---|---|
| 1. | षड्ज | स |
| 2. | शुद्ध ऋषभ | $रि_1$ |
| 3. | चतुश्रुति ऋषभ | $रि_2$ |

| | | |
|---|---|---|
| | शुद्ध गंधार | $ग_1$ |
| 4. | षटश्रुति ऋषभ | $रि_3$ |
| | साधारण गंधार | $ग_2$ |
| 5. | अंतर गंधार | $ग_3$ |
| 6. | शुद्ध मध्यम | $म_1$ |
| 7. | प्रति मध्यम | $म_2$ |
| 8. | पंचम | प |
| 9. | शुद्ध धैवत | $ध_1$ |
| 10. | चतुश्रुति धैवत | $ध_2$ |
| 11. | षटश्रुति धैवत | $ध_3$ |
| | कैशिकी निषाद | $नि_2$ |
| 12. | काकली निषाद | $नि_3$ |

किसी राग के स्वर यदि लिखने हों तो उसका उदाहरण है: कल्याणी राग का मेल स $रि_2$ $ग_3$ $म_2$ प $ध_2$ $नि_3$ सं।

स्वर के नाम में स्वर वर्ण परिवर्तन की सहायता से भी स्वरों के प्रकारों का प्रतिनिधित्व किया जाता है। उदाहरण के लियेरू ऋषभ के 3 प्रकार र रि रु या जैसे ग, गि, गु, म, मि, मु इत्यादि। सदियों पहले भारत में स्वर के नाम में स्वर वर्ण परिवर्तन की सहायता से स्वरों के प्रकारों का प्रतिनिधित्व करने का यह उपकरण आरंभ हुआ था। कुडुमियामलई शिलालेख (7वीं शताब्दी) में हमें यह मिलता है।

## पाठगत प्रश्न 7.3

1. कर्नाटक संगीत में स्वरों के कितने प्रकार हैं?

## 7.4 ताल

भारतीय संगीत में समय मापने वाले ताल प्रकारों की बड़ी संख्या और विविधता उपलब्ध है। सांगीतिक समय का अनुमान लगाने का सही और सरल ढंग बताने के लिये षडंग नाम के छह अंग हैं। छह में से तीन अंग सामान्य प्रयोग में हैं। वे लघु, द्रुत और अनुद्रुत हैं। ये मुख्य सात तालों की बनावट में आते हैं। सामान्यतया हम केवल इन तीन अंगों का प्रयोग करते हैं। अनुद्रुत और द्रुत का समय परिमाण स्थापित है।

| | अक्षरकाल | |
|---|---|---|
| अनुद्रुतं | 1 | U |
| द्रुतं | 2 | 0 |

लघु का समय परिमाण उसकी जाति में परिवर्तन के साथ भिन्न हो जाता है। इसका समय परिमाण 3, 4, 5, 7, 9 अक्षरकाल का हो सकता है। इसका संपादन दो भागों में है, दायीं जांघ पर दायें हाथ से ताली तथा अंगुली से गिनना। इसका संकेत है। अनुद्रुत को एक ताली द्वारा गिना जाता है। द्रुत ताली तथा हाथ को हिलाने से गिनते हैं। ताल का नाम भी लिखते हैं, जैसे तिस्रजाति रूपक ताल, खंडजाति त्रिपुट ताल इत्यादि। उदाहरण के लिये आदि ताल में जब हम रचना लिखते हैं, लघु का एक छोटी खड़ी लकीर- द्वारा प्रतिनिधित्व होता है। पहले द्रुत का एक छोटी खड़ी लकीर द्वारा प्रतिनिधित्व होता है। दो खड़ी लकीरें ताल आवर्तन या चक्र की समाप्ति का प्रतिनिधित्व करती हैं।

## पाठगत प्रश्न 7.4

1. समय माप क्या है?
2. लघु और द्रुत के चिह्न क्या हैं?
3. दो खड़ी लकीरें किस उद्देश्य से प्रयुक्त होती हैं?

## 7.5 अंतराल

स्वर लिपि में छोटे अक्षर ह्रस्व के समकक्ष हैं और एक यूनिट समय के अंतराल में स्वर स्वयं द्वारा प्रतिनिधित्व करते हैं। कर्नाटक संगीत में यूनिट समय अक्षर काल कहलाता है। दीर्घ स्वर बड़े अक्षर होते हैं, ये समय के दो यूनिट या दो अक्षर कालों का प्रतिनिधित्व करते हैं।

| | |
|---|---|
| स | एक अक्षर काल |
| स या सस | दो अक्षर काल |
| स,या ससस | तीन अक्षर काल |
| स; या ससससस | चार अक्षर काल |

एक स्वर के बाद कौमा एक यूनिट समय द्वारा अंतराल को बढ़ाता है और सेमि कोलन समय के दो यूनिट द्वारा अंतराल को बढ़ाता है। इसके पश्चात अंतराल में वश्द्धि का प्रतिनिधित्व आवश्यक कौमा और सेमि कोलन के लगाने से होता है। एक स्वर या स्वरों के समूह पर एक पड़ी लकीर लगाने से अंतराल आधा हो जाता है।

| | | | |
|---|---|---|---|
| स | स स | स स स स | |
| | ½ ½ | ¼ ¼ ¼ ¼ | = 1 |
| प्रथम काल | द्वितीय काल | त्रितीय काल | |
| या | या | या | |
| विलंब | मध्यम काल | द्रुत काल | |
| काल | | | |

## पाठगत प्रश्न 7.5

1. छोटे और बड़े अक्षरों के अंतर लिखिये।
2. स्वरों पर पड़ी लकीर लगाने का क्या उपयोग है।

## 7.6 स्थायी

स्थायी का अर्थ सात स्वरों की शृंखला है जो स से आरंभ होकर नि पर समाप्त होती है। स्थायी का दूसरा नाम सप्तक है। हमारे पास तीन मुख्य स्थायी हैं। स्वर के ऊपर एक बिंदु बताती है कि वह उच्च सप्तक या तार स्थायी से संबन्धित है। उदाहरणतया सं रिं गं मं। स्वर के नीचे एक बिंदु बताती है कि वह निम्न सप्तक या मंद्र स्थायी से संबन्धित है। उदाहरणतया स निछ ध छ पछ । बिना बिंदु के मालूम होता है कि मध्य सप्तक या मध्य स्थायी से संबन्धित है। उदाहरणतया स रि ग म प ध नि।

## 7.7 रचनाओं के लिये आदर्श स्वर लिपि

जब हम रचना लिखना आरंभ करते हैं, सबसे ऊपर उस रचना की राग और ताल का नाम लिखते हैं। तत्पश्चात मेलकर्ता की क्रम संख्या जिससे कि राग उत्पन्न हुई है। यदि राग एक जन्य राग है तो राग का आरोहन और अवरोहन, रचयिता का नाम तथा आरोहन और अवरोहन के स्वर स्थान दिये जाते हैं।

## पाठगत प्रश्न 7.6

1. स्थायी क्या है?
2. तार स्थायी क्या है?
3. मंद्र स्थायी क्या है?
4. मध्य स्थायी क्या है?

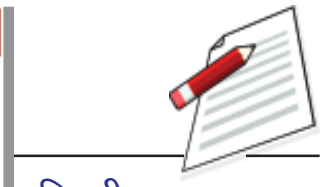

टिप्पणी

## आपने क्या सीखा

स्वर लिपि को हम संगीत लिपि कहते हैं। यह स्मृति के लिये एक शक्तिशाली साधन है। स्वर लिपि में दिये गये अनुच्छेद स्वरज्ञानं और रागज्ञानं में विकसित होते हैं। एक सीखी हुई तथा अंकित रचना को गाने में स्वर लिपि की सहायता से आसानी से पुनः स्मरण किया जा सकता है। यूनिट की नकल करने के लिये कुछ संकेत हैं जो अंतराल, स्वरों का सप्तक, ताल आवर्तन आदि का सुझाव देते हैं।

## पाठांत प्रश्न

1. स्वर लिपि पद्धति की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि लिखिये।
2. स्वर लिपि पद्धति कितने प्रकार की है?
3. संगीत स्वरों के प्रकारों पर टिप्पणी लिखिये।
4. कर्नाटक संगीत में ताल पर एक अनुच्छेद लिखिये।

## पाठगत प्रश्नों के उत्तर

### 7.1

1. स्वर लिपि का अर्थ संगीत का ख़श्य रूप है।
2. कुछ विद्यार्थी निजी उम्मीदवारों की तरह संगीत की परीक्षा देते हैं। इस प्रकार के विद्यार्थियों के लिये पुस्तकों द्वारा संगीत की शिक्षा लेना आवश्यक है।
3. 7वीं शताब्दी ई. में स्वर लिपि का अपरिकृत रूप कुडुमियामलई शिलालेख से पहचाना जा सकता है।

### 7.2

1. दो प्रकार की स्वर लिपि होती है।
2. संगीत समानांतर रेखाओं पर लिखा जाता है। स्वर रेखा पर और रेखाओं के मध्य लिखे जाते हैं।
3. संगीत सोल्फा शब्दांश अर्थात स रि ग म सीधी पंक्ति में लिखे जाते हैं।
4. महत्वपूर्ण तत्त्व संगीत स्वर, ताल, अंतराल, स्थायी का संकेत, खड़ी और पड़ी लकीरें हैं।

टिप्पणी



**7.3**

1. स्वरों के 16 प्रकार हैं जिनमें 4 के दो नाम हैं, अर्थात 12 स्वर भारतीय संगीत में प्रयुक्त होते हैं।

**7.4**

1. सांगीतिक समय का अनुमान लगाने का सही और सरल ढंग बताने के लिये।
2. 1 और 0
3. दो खड़ी लकीरें आवर्त के अंत को दर्शाती हैं।

**7.5**

1. छोटा अक्षर एक अक्षर काल बताता है और बड़ा अक्षर दो अक्षर काल बताता है।
2. स्वरों पर एक पड़ी लकीर अंतराल को आधा कर देती है।

**7.6**

1. स्थायी का अर्थ स्वर सप्तक है जो सात स्वरों की शृंखला है।
2. स्वरों के ऊपर एक बिंदु।
3. स्वरों के नीचे एक बिंदु।
4. बिना बिंदु मध्य स्थायी होता है।

## निर्देशित कार्य कलाप

1. विद्यार्थी को सरल संगीत रूप जैसे गीतं, जाति स्वर सीखने चाहिये।
2. उसे वर्ण लिखना सीखना चाहिये।
3. कृति और अन्य रचनायें लिखने का अभ्यास करना चाहिये।